अतिरिक्त भाग

अय्यूब की भावनाएं

डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए अपने शोध के लिए अय्यूब की पुस्तक की खोज करने के दौरान मैंने एच. व्हीलर रोबिन्सन[1] की विचार-प्रेरक पुस्तक पढ़ी। मैं उन कई निष्कर्षों से तथा औपचारिक नियमों से तो सहमत नहीं हूं जो अय्यूब के सम्बन्ध में रोबिन्सन ने निकाले हैं, परन्तु पुस्तक मुझे अय्यूब के चिंतन का उपयोगी विश्लेषण प्रतीत हुई।

अय्यूब की सहज भावनाएं

अध्याय 3 से 31 में मिलने वाली अय्यूब की छंदबद्ध बातचीत में, रोबिन्सन ने लिखा कि ''तर्कसंगत विचार के बजाय वास्तविक भावना के दायरे में जा रहे हैं।''[2] कई अध्यायों में जहां उसने या तो निराशा में नीचे जाकर या आशा में ऊपर उठते हुए भाषणों के साथ दु:ख की समानांतर रेखा को दिखाते हुए बात की थी, रोबिन्सन ने अय्यूब की सोच को स्पष्ट दिखाया है।[3]

हम सब जानते हैं कि दु:ख सहने में सही गई भावनाएं सीधी रेखा में नहीं जाती हैं। हो सकता है कि कोई घोर निराशा में हो, जिसके बाद आशा के ऊंचे बिंदु आते हैं और फिर से निराशा आ जाती है। मैं अय्यूब की इन ''सहज भावनाओं'' को पुस्तक में सही और प्रामाणिक नोट मानता हूं। उन से हमें विश्वास हो जाता है कि हम जीवन की वास्तविक परिस्थिति वाले एक वास्तविक व्यक्ति की बात कर रहे हैं।

रोबिन्सन की समानांतर रेखा में अध्याय 3 में अय्यूब द्वारा जताए गए दु:ख को दर्शाया। फिर वह अकेलेपन (अध्याय 6), कड़वाहट (अध्याय 7), बेबसी (अध्याय 9) को नीचे की ओर ले गया। इनके बाद परमेश्वर के सामने अपील से अय्यूब का निराशा से ऊपर उठना हुआ (अध्याय 10), परम्परागत शिक्षाओं की नाकामी की चर्चा (अध्याय 12; 13), और आशा की सम्भावित अभिव्यक्ति (अध्याय 14)। फिर अय्यूब निराशा की गहराइयों में फिर से डूब गया जब उसने परमेश्वर को अपना शत्रु मान लिया (अध्याय 16; 17)। इसके तुरन्त बात आशा का उच्चतम बिंदु आया जिसमें उसने माना, ''मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ाने वाला जीवित है'' (अध्याय 19)। फिर से अय्यूब बिल्कुल मायूस हो गया जब उसने अनैतिक संसार (अध्याय 21) और ईश्वरीय प्रबन्ध के भेदों पर ध्यान किया (अध्याय 23; 24)। अय्यूब के अंतिम भाषण निराशा से बढ़कर थे जब उसने परमेश्वर की महानता (अध्याय 26), बुराई के अंत (अध्याय 27), और बुद्धि की मानता (अध्याय 28) पर विचार किया। अपनी यादों में वह निराशा की रेखा (अध्याय 29) और दीनता की ओर मुड़ गया (अध्याय 30)। उसने अपने भाषणों का समापन एक अंतिम चुनौती के उच्च बिंदु (अध्याय 31) अर्थात पुराने नियम में पाए जाने वाली सदाचार की बेहतरीन अभिव्यक्तियों में से एक के साथ किया।

अपने अध्ययनों में मुझे इस तथ्य का भी पता चला कि अय्यूब और तीनों मित्र एक ही समस्या यानी सम्भावित धर्मी व्यक्ति के दु:ख उठाने की समस्या पर ध्यान लगा रहे थे। इसलिए उनके बीच अधिक बातचीत नहीं हुई। अय्यूब के भाषणों को पढ़कर पता चल सकता है कि उनमें

तीनों मित्रों के किसी भाषण की बात नहीं है। उन तीनों मित्रों के भाषणों को भी पढ़ा जा सकता है। वे निर्दोष लोगों के दु:ख उठाने की समस्या का पता लगाने के लिए एक दूसरे के साथ बहस करते हुए नहीं लगते हैं। बेशक कई कई जगह वे सीधे एक दूसरे को उत्तर देते हैं पर ज्यादातर वे एक धर्मी व्यक्ति के दु:ख उठाने की समस्या की समीक्षा ही इतनी बुरी तरह से कर रहे हैं।

अय्यूब की भावनाओं का एक विशलेषण

अध्याय 3 में अपने दु:ख के गहरे होने की बात करते हुए अय्यूब ने चुप्पी तोड़ी। उसके दु:ख के बाहर आने से आगे की चर्चाओं के लिए रास्ता खुल गया। उसके शब्दों ने तीनों मित्रों को चौंका दिया जो सात दिन से अय्यूब के साथ चुपचाप बैठे थे (2:13)। वे उसकी बातों से नाराज़ हो गए। अध्याय 3 में छंदबद्ध बातचीत आरम्भ होती है जो 42:7 तक चली।

अध्याय 6 उस अकेलेपन को बताता है जिसे अय्यूब महसूस कर रहा था। उसे लगा कि उसे परमेश्वर की ओर से और उसके मित्रों की ओर से त्याग दिया गया है। मित्र उन सूखी वादियों के जैसे मिथ्या बन गए थे जिनमें मरूस्थल के यात्री पानी की उम्मीद से जाते हैं (6:15)। उन्हें उस पर करुणा दिखानी चाहिए थी परन्तु इसके बजाय उन्होंने अय्यूब के जीवन में किसी काल्पनिक गुप्त पाप के कारण उस पर आरोप लगा दिए।

इस अकेलेपन के कारण सहज रूप में वह कड़वाहट पैदा हो गई जो अध्याय 7 में दिखाई गई है। पिछले अध्याय में जहां तीनों मित्रों से बात की गई थी वहीं इस अध्याय में अय्यूब ने परमेश्वर के सामने शिकायत की जिसने, उसे लगता था कि उसे छोड़ दिया है। उसे लगा कि जैसे वह कोई गुलाम या मज़दूर हो जो मेहनत करके थक गया हो (7:1, 2), गहरी पीड़ा से होने वाले दु:ख से उसे भीतरी पीड़ा हुई (7:4)। उसने परमेश्वर को ''लोगों पर निगरानी'' रखने वाले के रूप में देखा कि कब वे पाप करें और कब वह उन्हें पकड़े। उसे लगा कि दण्ड के लिए उसे ''निशाना'' बनाया गया है (7:20)।

यह कड़वाहट अध्याय 9 में परमेश्वर के सामने उसकी अपनी लाचारी को और स्पष्टता से दिखाती थी, जिसे वह अन्यायी मानता था। उसे समझ में आया कि वास्तव में जीवन के अर्थ के उत्तर देने के लिए कोई भी परमेश्वर को चुनौती नहीं दे सकता (9:32)।

तौभी अय्यूब ने परमेश्वर के सामने विनती की। अध्याय 10 में उसने माना कि परमेश्वर उसका बनाने वाला है (10:8)। उसे मालूम था कि परमेश्वर ने उसे ''जीवन दिया'' और उस पर ''करुणा की है'' और उसके ''प्राण की रक्षा'' की है (10:12)। अय्यूब परमेश्वर से केवल इतना चाहता था कि उसका ''मन थोड़ा शांत'' हो जाए (10:20)।

इससे मित्रों द्वारा बताई गई पाप और दु:ख की परम्परागत शिक्षाओं की नाकामी की अय्यूब की चर्चा आरम्भ हो गई जिसे पहले अय्यूब ही अपने दु:ख का कारण मानता था (अध्याय 12; 13)। उसने मित्रों पर ''निकम्मे वैद्य'' होने का आरोप लगाया (13:4)। वे ऐसे इलाज बता रहे थे जो ''अय्यूब की बीमारी'' के लिए उपयुक्त नहीं थे।

आशाओं और भयों की बात करते हुए अगले अध्याय में (अध्याय 14), अय्यूब ने पहली बार आशा की एक झलक दी। एक वृक्ष के रूपक का इस्तेमाल करते हुए जिसे काट डाला गया हो पर वह फिर से फूट निकलता है (14:7-9), उसने पूछा, ''यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह

फिर जीवित होगा?'' (14:14)। फिर भी आशा की झलक जल्द ही मित्रों की जांच और उस गहरी पीड़ा के कारण जिसे वह सह रहा था जाती रहनी थी।

अगली बार जब अय्यूब ने बात की (अध्याय 16), तो उसने गहरी निराशा व्यक्त की। रोबिन्सन ने लिखा:

> यह देखना निराशाजनक है कि शानदार आशा सूर्यास्त की शान की तरह मिट जाती है, यह देखना कि अय्यूब सच्चाई के इतना निकट था, परमेश्वर और अनश्वरता में मसीही विश्वास के बिल्कुल किनारे पर, कांपते हुए और फिर निराशा में अपने हाथ छोड़ देता है [अध्याय 16]। परन्तु जीवन यही है। आप और मैं और हर पीड़ी ऐसा ही करती है।[14]

अध्याय 17 और भी गहरी निराशा को व्यक्त करता है जब अय्यूब परमेश्वर पर उसे ''लोगों की उपमा'' बनाने का आरोप लगाता है (17:6)। वह मित्रों को यह कहते हुए डांटता है, ''मुझे तुम लोगों में एक भी बुद्धिमान न मिलेगा'' (17:10)।

इस गहरी निराशा में से अय्यूब की सोच इस तथ्य में से ऊपर की ओर उठती है कि उसका एक एक छुड़ाने वाला था जो उसे अंत में निर्दोष साबित कर देगा (अध्याय 19)। रोबिन्सन ने इसे अय्यूब की आशा का सबसे उच्चतम बिंदु माना (देखें रेखाचित्र)। उसने कहा, ''यह सम्भावित विजय की विजयी तार में ... हवा में उड़ना है - जो पौलुस के ''परमेश्वर का धन्यवाद हो, 'जो हमें विजय दिलाता है' की पुराने नियम की सबसे नज़दीकी बात है।''[15]

किसी को लग सकता है कि अय्यूब ने अब अपने निर्दोष ठहरने की आराम से राह देखी थी। रोबिन्सन ने सुझाव दिया कि ''कोई अधुनिक पुस्तक सम्भवतया अय्यूब के शब्दों को इस ऊंचे नोट के साथ खत्म करती है। नाटकीय प्रभाव देने के लिए, यदि कुछ और नहीं तो।''[16] परन्तु अय्यूब एक दम फिर से निराशा में लौट गया जब उसने अनैतिक संसार की ओर ध्यान किया (अध्याय 21), जिसे रोबिन्सन ने कहा कि ''जीवन का सच है।''[17] अय्यूब ने उन अनैतिक धनवानों को देखा जो ऐशोआराम में जीते और शांति से मर जाते हैं। उन्हें शानदार कब्रों के अंदर रखा जाता है। यह तथ्य कि कुछ दुष्ट लोग जीवन भर खुशहाल रहते हैं। तीनों मित्रों के सामने रहता है कि उन्हें इस जीवन में दण्ड नहीं मिलता।

अध्याय 23 और 24 में अय्यूब ने परमेश्वर की ईश्वरीय रक्षा के भेदों पर ध्यान किया। उसने अपना मुकदमा उसके सामने पेश करने की इच्छा से परमेश्वर के सामने जाना चाहा। उसे यह समझ नहीं थी कि दुष्ट लोग किस प्रकार से चोरी और अनाथों और विधवाओं के साथ व्यवहार करने के बावजूद दण्ड से छूट जाते हैं। उसने इस पर विचार किया कि क्यों ''परमेश्वर मूर्खता का हिसाब नहीं लेता'' (24:12)।

अध्याय 26 में अय्यूब ने एक बार फिर से मित्रों को डांटा (26:2-4) और परमेश्वर की महानता को स्वीकार किया। वही तो ''उत्तर दिशा को निराधार फैलाए रहता है, और बिना टेक पृथ्वी को लटकाए रखता है'' (26:7)। परमेश्वर ''रहब को छेद देता'' और ''भागने वाले नाग को मार देता'' है (26:12, 13)। ''उसकी आहट फुसफुसाहट ही सी तो सुन पड़ती है!'' (26:14)।

अध्याय 27 से 31 में अय्यूब ने तीनों मित्रों की रुकावट के बिना अपनी बात जारी रखी।

अध्याय 27 में उसने दुष्टों के अंत की बात की। अध्याय 28 में उसने यह कहते हुए कि ''प्रभु का भय मानना यही बुद्धि है और बुराई से दूर रहना यही समझ है'' बुद्धि को सराहा (28:28)। अध्याय 29 में अय्यूब ने अपने शानदार अतीत को याद किया और उसे पाना चाहा। अध्याय 30 में उसने अपने से छोटे इन लोगों से मिले दु:ख की वर्तमान अपमान के साथ तुलना की, ''जिनके पिताओं को मैं अपनी भेड़ बकरियों के कुत्तों के काम के योग्य भी न जानता था'' (30:1)।

पुराने नियम में मिलने वाले नैतिक जीवन के सबसे बड़े कथनो में से एक के साथ अध्याय 31 में अय्यूब की बातें खत्म हो जाती थीं। रोबिन्सन ने लिखा:

> यह अय्यूब के निर्दोष होने की घोषणा ही नहीं है बल्कि उस युग के ''भले आदमी'' के सामाजिक और धार्मिक कर्त्तव्यों को दिखाने का सार है। किसी ने सही कहा है कि ''यदि हम पुराने नियम के नैतिक कर्त्तव्यों की समीक्षा चाहते हैं तो यह हमें अय्यूब की बातचीत में मिल सकती है जब वह अपने मित्रों की ओर से मुड़कर अपने पिछले जीवन पर विचार करता है, बजाय दस आज्ञाओं के।''[8]

मैं चाहे परमेश्वर के इस्राएल को दस आज्ञाएं देने की अय्यूब की बात के विरोध में रोबिन्सन से सहमत नहीं हूं, पर मैं यह मानता हूं कि अय्यूब की बात वैसे जीवन की थी जो परमेश्वर को भाता है एक अच्छी बात है।

टिप्पणियां

[1]एच. व्हीलर रोबिन्सन, द *क्रॉस इन द ओल्ड टैस्टामैंट* (लंदन: एससीएम प्रैस, लिमिटेड, 1955)। [2]वहीं, 25. [3]वहीं, 14. [4]वहीं, 26. [5]वहीं, 28. [6]वहीं, 29, [7]वहीं। [8]वहीं, 30.